

আবৃত্তি প্রতিযোগিতা

ক বিভাগ

(পঞ্চম - ষষ্ঠ শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

পাখির মত

আল মাহমুদ

আম্মা বলেন, পড়রে সোনা
আব্বা বলেন, মন দে।
পাঠে আমার মন বসে না
কাঁঠাল চাঁপার গন্ধে।
আমার কেবল ইচ্ছে জাগে
নদীর ধারে থাকতে,
বকুলডালে লুকিয়ে থেকে
পাখির মতো ডাকতে।
সবাই যখন ঘুমিয়ে পড়ে,
কর্ণফুলীর কুলটায়।
দুধভরা ঐ চাঁদের বাটি
ফেরেস্তারা উল্টায়।
তখন কেবল ভাবতে থাকি
কেমন করে উড়বো,
কেমন করে শহর ছেড়ে
সবুজ গাঁয়ে ঘুরবো।
তোমরা যখন শিখছো পড়া
মানুষ হওয়ার জন্য
আমিই না-হয় পাখিই হবো
পাখির মতো বন্য।

খ বিভাগ

(সপ্তম - অষ্টম শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

কাদের তরে লিখছো দাদা?

ভবানীপ্রসাদ মজুমদার

কাদের তরে লিখছো দাদা, লিখছো কাদের তরে?
ভোর না হতেই আঁধার নামে যাদের কুঁড়েঘরে!
চুয়িকাঠি ছেড়েই যারা জ্বুতোর বুরুশ ধরে
তারা কি আর কেউ কখনও বইপত্র পড়ে?

কাদের তরে লিখছো দাদা, লিখছো কাদের তরে?
গাঁইতি শাবল কোদাল কাঁধেই ফিরছে যারা ঘরে!
বুকের উপর সদাই যাদের বাঘের থাবা নড়ে
তারা কি আর কেউ কোনও দিন বইপত্র পড়ে?

করছি মাথা হেঁট গো দাদা, করছি মাথা হেঁট
তোমার লেখায় ওদের কি আর ভরবে কারও পেট?
তোমার কেতাব রাজবাড়িতেই পাঠিয়ে দিও ভেট
মিলবে খেতাব, মিলবে খাতির, বাড়বে 'খ্যাতির রেট'!!

সত্যি ভীষণ জ্বালা দাদা, সত্যি ভীষণ জ্বালা
কথার মালা চায় না ওরা, চায় না কথার মালা!
রূপকথার ওই রাজমহলে ঝুলছে ক্ষুধার তালা
ওদের চোখে স্বপ্ন আঁকে পাগলাভাতের থালা !!

পাঁচতলাতে নয়কো যারা, গাছতলাতেই থাকে
তোমার কলম তাদের ব্যথার একটু কি খোঁজ রাখে?
ডুবছে যারা জটিল-জীবন চোরাবালির পাঁকে?
তাদের চোখের জলে কজন চালচিন্তির আঁকে?

গ বিভাগ
(নবম - দশম শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

কুলি মজুর কাজী নজরুল ইসলাম

দেখিনু সেদিন রোলে,
কুলি ব'লে এক বাবু সা'ব তারে ঠেলে দিলে নীচে ফেলে!

চোখ ফেটে এল জল,
এমনি ক'রে কি জগৎ জুড়িয়া মার খাবে দুর্বল?
যে দধীচিদের হাড় দিয়ে ঐ বাষ্প-শকট চলে,
বাবু সা'ব এসে চড়িল তাহাতে, কুলিরা পড়িল তলে।
বেতন দিয়াছ?-চুপ রও যত মিথ্যাবাদীর দল!
কত পাই দিয়ে কুলিদের তুই কত ক্রোর পেলি বল!
রাজপথে তব চলিছে মোটর, সাগরে জাহাজ চলে,
রেলপথে চলে বাষ্প-শকট, দেশ ছেয়ে গেল কলে,
বল ত এ-সব কাহাদের দান! তোমার অটালিকা
কার খুনে রাঙা?-ঠুলি খুলে দেখ, প্রতি ইটে আছে লিখা।
তুমি জান নাকো, কিন্তু পথের প্রতি ধূলিকণা জানে
ঐ পথ, ঐ জাহাজ, শকট, অটালিকার মানে!

আসিতেছে শুভদিন,
দিনে দিনে বহু বাড়িয়াছে দেনা, শুধিতে হইবে ঋণ!
হাতুড়ি শাবল গাঁইতি চালায়ে ভাঙিল যারা পাহাড়,
পাহাড়-কাটা সে পথের দু'পাশে পড়িয়া যাদের হাড়,
তোমারে সেবিত হইল যাহারা মজুর, মুটে ও কুলি,
তোমারে বহিতে যারা পবিত্র অঙ্গে লাগাল ধূলি;
তারাই মানুষ, তারাই দেবতা, গাহি তাহাদেরই গান,
তাদেরই ব্যথিত বক্ষে পা ফেলে আসে নব উত্থান!
তুমি শুয়ে রবে তেতালার পরে, আমরা রহিব নীচে,
অথচ তোমারে দেবতা বলিব, সে ভরসা আজ মিছে!
সিক্ত যাদের সারা দেহ-মন মাটির মমতা-রসে
এই ধরণির তরণির হাল রবে তাহাদেরই বশে!
তারই পদরজ অঞ্জলি করি মাথায় লইব তুলি
সকলের সাথে পথে চলি যার পায়ে লাগিয়াছে ধূলি!

(অংশবিশেষ)

ঘ বিভাগ
(একাদশ - দ্বাদশ শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

প্রার্থী সুকান্ত ভট্টাচার্য

হে সূর্য! শীতের সূর্য!
হিমশীতল সুদীর্ঘ রাত তোমার প্রতীক্ষায়
আমরা থাকি,
যেমন প্রতীক্ষা ক'রে থাকে কৃষকদের চঞ্চল চোখ,
ধানকাটার রোমাঞ্চকর দিনগুলির জন্যে।
হে সূর্য, তুমি তো জানো,
আমাদের গরম কাপড়ের কত অভাব!
সারারাত খড়কুটো জ্বালিয়ে,
এক-টুকরো কাপড়ে কান ঢেকে,
কত কষ্টে আমরা শীত আটকাই!
সকালের এক-টুকরো রোদদুর—
এক-টুকরো সোনার চেয়েও মনে হয় দামী।
ঘর ছেড়ে আমরা এদিক-এদিক যাই—
এক-টুকরো রোদদুরের তৃষ্ণায়।

হে সূর্য !
তুমি আমাদের স্যাঁতসেঁতে ভিজে ঘরে
উত্তাপ আর আলো দিও,
আর উত্তাপ দিও,
রাস্তার ধারের ঐ উলঙ্গ ছেলেটাকে।

হে সূর্য!
তুমি আমাদের উত্তাপ দিও—
শুনেছি, তুমি এক জ্বলন্ত অগ্নিপিণ্ড,
তোমার কাছে উত্তাপ পেয়ে পেয়ে
একদিন হয়তো আমরা প্রত্যেকেই এক একটা জ্বলন্ত অগ্নিপিণ্ডে
পরিণত হব!

তারপর সেই উত্তাপে যখন পুড়বে আমাদের জড়তা,
তখন হয়তো গরম কাপড়ে ঢেকে দিতে পারবো
রাস্তার ধারের ঐ উলঙ্গ ছেলেটাকে।
আজ কিন্তু আমরা তোমার অকৃপণ উত্তাপের প্রার্থী।

हिन्दि कविता

क - विभाग

(पञ्चम-सप्तम श्रेणि छात्र-छात्रीदेव जना)

प्रार्थना

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

नहीं नहीं प्रभु तुमसे
शक्ति नहीं माँगूँगा।

अर्जित करूँगा उसे मरकर बिखरकर
आज नहीं कल सही आऊँगा उबरकर
कुचल भी गया तो लज्जा किस बात की
रोकूँगा पहाड़ गिरता
शरण नहीं माँगूँगा
नहीं नहीं प्रभु तुमसे
शक्ति नहीं माँगूँगा।

कब माँगी गन्ध तुमसे गन्धहीन फूल ने
कब माँगी कोमलता तीखे खिंचे शूल ने
तुमने जो दिया, दिया,
अब जो है, मेरा है।
सोओ तुम, व्यथा रैन अब मैं ही जागूँगा।
नहीं नहीं प्रभु तुमसे
शक्ति नहीं माँगूँगा।

ख - विभाग

(अष्टम-दशम श्रेणि छात्र-छात्रीदेव जना)

कृष्ण की चेतावनी

रामधारी सिंह 'दिनकर'

वर्षों तक वन में घूम-घूम,
बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर,
पांडव आये कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें, आगे क्या होता है।
मैली की राह बताने को,
सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को,
भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान् हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेश लाये।
दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे!

दुर्योधन वह भी दे ना सका,
आशीष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला,
जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुंकार किया,
अपना स्वरूप-विस्तार किया,
डगमग-डगमग दिग्गज डोले,
भगवान् कुपित होकर बोले-
'जंजीर बढ़ा कर साध मुझे,
हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।

यह देख, गगन मुझमें लय है,
यह देख, पवन मुझमें लय है,
मुझमें विलीन झंकार सकल,
मुझमें लय है संसार सकल।
अमरत्व फूलता है मुझमें,
संहार झूलता है मुझमें

बाँधने मुझे तो आया है,
जंजीर बढ़ी क्या लाया है?
यदि मुझे बाँधना चाहे मन,
पहले तो बाँध अनन्त गगन।
सूने को साध न सकता है,
वह मुझे बाँध कब सकता है?

हित-वचन नहीं तूने माना,
मैली का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ,
अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं, अब रण होगा,
जीवन-जय या कि मरण होगा।

ग - विभाग
(एकादश - द्वादश श्रेणित छात्र-छात्रीদের জন্য)

जाग मुझको दूर जाना

महादेवी वर्मा

चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;

आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जागकर विद्युत-शिखाओं में नितुर तूफ़ान बोले!

पर तुझे है नाश-पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?

विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले?

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

वज्र का उर एक छोटे अश्रु-कण में धो गलाया,
दे किसे जीवन सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?

सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?

अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना?
जाग तुझको दूर जाना?

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी;

हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी!

है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना!
जाग तुझको दूर जाना!

اردو پڑھنے کا مقابلہ

زمرہ - ”اے“
پانچویں سے آٹھویں جماعت کے طلباء/ طالبات کے لئے

زمرہ - ”بی“
نویں سے بارہویں جماعت کے طلباء/ طالبات کے لئے

ہمدردی

(ڈاکٹر علامہ اقبال)

ٹہنی پہ کسی شجر کی تنہا بلبل تھا کوئی اداس بیٹھا
کہتا تھا کہ رات سر پہ آئی اڑنے چگنے میں دن گزارا
پہنچوں کس طرح آشیاں تک ہر چیز پہ چھا گیا اندھیرا
سن کے بلبل کی آہ وزاری جگنو کوئی پاس ہی سے بولا
حاضر ہوں مدد کو جان و دل سے کیڑا ہوں، گرچہ میں ذرا سا
کیا غم ہے جو رات ہے اندھیری میں راہ میں روشنی کروں گا
اللہ نے دی ہے مجھ کو مشعل چمکا کے مجھے دیا بنایا

ہیں لوگ وہی جہاں میں اچھے

آتے ہیں جو کام دوسروں کے

غزل

دکیل اختر

جہالت کا منظر جو راہوں میں تھا
وہی بیش و کم درس گاہوں میں تھا

جو خنجر بکف قتل گاہوں میں تھا
وہی وقت کے سربراہوں میں تھا

عجب خامشی اس کے ہونٹوں پہ تھی
عجب شور اس کی نگاہوں میں تھا

ہماری نظر سے وہ کل گر گیا
جو کل تک ہماری نگاہوں میں تھا

اسے اس لئے مار ڈالا گیا
کہ وہ زیست کے خیر خواہوں میں تھا

وہ کیا دیتا اختر کسی کو پناہ
جو خود عمر بھر بے پناہوں میں تھا

সাঁওতালি আবৃত্তি প্রতিযোগিতা

‘ক’ বিভাগ

(পঞ্চম-অষ্টম শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

কবিতা : “বয়হা মিলন”

কবি : সাধু রামচাঁদ মুরমু

মিমিং ঠপাঃ জাড়ি দাঃ দ রিমিল খনাঃ ঝারাঃ,
জাড়ি কাতে ‘নাই’ ‘দরয়া’ গাঙ গাড়া ক ভরাঃ।
লুবুই লুবুই গিতিল হাসা মিৎ রে যুদি জিপঃ,
ধিরি বুরু ধীরতি বেনাঃ সুমুদুর রে টিপঃ।
অকা মিৎ খি সাউড়ি সুতাম নাসেনাঃ তে চাটকাঃ,
অনা সাউড়ি চারাহি লেরে আঁড়িয়া হাতী আটকাঃ।
নওয়া অতরে অকা জাতরেন সাগাই আক বয়হা,
উনকু সমান দাড়ে সাধনাঃ অকয় টিকীঃ যধহা?
মানওয়া কওয়াঃ উচিত তাক বয়হা মনে জোমেল,
উদুগঃ ক পারুক্ তবে সানামাঃ ক তামেল।

‘খ’ বিভাগ

(নবম-দ্বাদশ শ্রেণির ছাত্র-ছাত্রীদের জন্য)

“লাহাঃ হর রে”

সারদা প্রসাদ কিস্কু

রিমিল ঞুতীত কাড়াং কাড়াং,
আজম হিজুঃ মহিম আড়াং,
এনহঁ হুয়ুঃ লাহা।
হর দ নঅয় লেজেং আকান,
ঘুটু খারাং একাল আকান,
জাংগা কিন হঁ রাহাঃ।
চিলি তানিচ রাঃ এদ লেকা,
আজম এগাম দক্ষিণ নাখা,
জাপিদ সাড়া সাতিএঃ।
জিউয়ি জাগেং চুমুল চুমুল,
বুঝাউ এগাম এন চেতাত উমুল,
মনে উরিচ কাতিএঃ।
হয়য়েং কানায় রেয়াড় রাবাং,
না পায় দরে অকাগে বাং,
হড়ম টুকুর টুকুর।
লাহা তায়নম দেনে বানার,
এংলঃ আ বাং আনার বানার,
দিশম দরে উকুর?
তাড়াম হুয়ুঃ তিমিন সাগিএঃ,
অকয় লাই আঁএঃ অকয় তাগিএঃ,
হড় দএঃ লাঁগা এনা।
গগং সানাএঃ আদেশ আতেং,
অকয় লাইআঁএঃ চেরেচ কাতে,
নঅয় আঙ্গা এনা।

মুচাং

সঙ্গীত প্রতিযোগিতা

‘ক’ বিভাগ

(পঞ্চম - ষষ্ঠ শ্রেণির ছাত্রছাত্রীদের জন্য)

রবীন্দ্রসঙ্গীত

(সময় ৪ মিনিট)

বিপদে মোরে রক্ষা করো এ নহে মোর প্রার্থনা

ইমন / বাম্পক

বিপদে মোরে রক্ষা করো এ নহে মোর প্রার্থনা—

বিপদে আমি না যেন করি ভয়।

দুঃখতাপে ব্যথিত চিতে নাই বা দিলে সান্ত্বনা,

দুঃখে যেন করিতে পারি জয়।।

সহায় মোর না যদি জুটে নিজের বল না যেন টুটে—

সংসারেতে ঘটিলে ক্ষতি, লভিলে শুধু বঞ্চনা,

নিজের মনে না যেন মানি ক্ষয়।।

আমারে তুমি করিবে ত্রাণ এ নহে মোর প্রার্থনা—

তরিতে পারি শক্তি যেন রয়।

আমার ভার লাঘব করি নাই বা দিলে সান্ত্বনা,

বহিতে পারি এমনি যেন হয়।।

নশ্বশিরে সুখের দিনে তোমারি মুখ লইব চিনে—

দুখের রাতে নিখিল ধরা যে দিন করে বঞ্চনা

তোমারে যেন না করি সংশয়।।

II	১'	সা	সাঁ	সাঁ		২'	না	না	I	১'	ধা	-া	ধা		২'	পা	পা	I
		বি	প	দে			মো	রে			র	০	ক্ষা			ক	রো	
I		ধা	ধা	ধা			পা	ক্ষা	I	১'	গা	-ক্ষা	গা		২'	না	-ধা	I
		এ	ন	হে			মো	র			প্রা	০র্	থ			না	০	
I		ধা	ধা	ধা			পা	রা	I		গা	গা	গা			রা	রা	I
		বি	প	দে			আ	মি			না	যে	ন			ক	রি	

I	সা ভ	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	I	গা দুঃ	-১ ০	গা খ		রা তা	রা পে	I
I	সা ব্য	সা থি	না ত		ধা চি	না তে	I	*গা না	-১ ই	রা বা		সা দি	না লে	I
I	সা সা	-১ ন্	রা ত্ব		সরা না০	-গা ০	I	পা দুঃ	-১ ০	পা থে		পা যে	রা ন	I
I	গা ক	গা রি	গা তে		রা পা	রা রি	I	সা জ	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	II
II	{পা স	পা হা	-গা য়		পা মো	-ধা র্	I	ধা না	র্সা য	র্সা দি		র্সা জু	র্সা টে	II
I	র্সা নি	র্গা জে	র্গা র		র্রা ব	র্রা ল	I	র্সা না	র্সা যে	না ন		ধা টু	পা টে	I
I	র্গা স	-১ ঙ্	র্গা সা		র্রা রে	র্রা তে	I	র্সা ঘ	র্সা টি	র্সা লে		না ক্ষ	না তি	I
I	ধা ল	ধা ভি	ধা লে		পা শু	ক্ষা ধু	I	*গা ব	-ক্ষগা ০ন্	ক্ষা চ		*না না	-ধা ০	I
I	ধা নি	ধা জে	পা র		পা ম	রা নে	I	গা না	গা যে	গা ন		রা মা	রা নি	I
I	সা ক্ষ	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	II							
II	{গা আ	ক্ষা মা	গা রে		*পা তু	পা মি	I	পা ক	পা রি	পা বে		*পা ত্রা	-১ ণ্	I
I	পা এ	পা ন	পা হে		পা মো	ক্ষা র	I	*গা প্রা	-ক্ষগা ০র্	ক্ষা থ		*না না	ধা ০	I

I	ধা ত	ধা রি	পা তে		পা পা	রা রি	I	গা শ	গা ক	গা তি		রা যে	রা ন	I
I	সা র	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	I	গা আ	গা মা	গা র		রা ভা	-১ র্	I
I	সা লা	সা ঘ	না ব		ধা ক	না রি	I	গা না	-১ ই	রা বা		সা দি	না লে	I
I	সা সা	-১ ন্	রা ত্ব		সরা না	-গা ০	I	পা ব	পা হি	পা তে		পা পা	রা রি	I
I	গা এ	গা ম	গা নি		রা যে	রা ন	I	সা হ	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	I
I	{পা ন	-১ ০	গা ত্র		পা শি	ধা রে	I	ধা সু	র্সা থে	র্সা র		র্সা দি	র্সা নে	I
I	র্সা তো	র্গা মা	র্গা রি		র্রা মু	-১ খ্	I	র্সা ল	র্সা ই	না ব		ধা চি	পা নে	I
I	র্গা দু	র্গা থে	র্রা র		র্রা রা	র্রা তে	I	র্সা নি	র্সা খি	র্সা ল		না ধ	না রা	I
I	ধা যে	ধা দি	ধা ন		পা ক	ক্ষা রে	I	গা ব	-ক্ষগা ০ন্	ক্ষা চ		ক্ষা না	-ধা ০	I
I	ধা তো	ধা মা	পা রে		পা যে	রা ন	I	গা না	গা ক	গা রি		রা স	-১ ঙ্	I
I	সা শ	-১ ০	-১ ০		-১ ০	-১ য়	II	II						